मुगलकाल में स्त्रियों की स्थिति का अध्ययन

Sushila Devi*

M.A. in History, UGC NET

शोध-सारः – ***मुगलकालीन भारतीय समाज में स्त्रियो को सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त नहीं था। उन्हें केवल मनोरंजन एवं भोग-विलास का साधन समझा जाता था। मुस्लिम एवं हिन्दू स्त्रियों में अनेक प्रकार की कुप्रथाए प्रचलित थी। इन बुरी प्रथाओं के कारण स्त्रियों का जीवन जानवरों जैसा था। केवल उच्च वर्ग से संबंधित स्त्रियो को कुछ अधिकार प्राप्त थे। लेकिन निम्न वर्ग की स्त्रियों की दशा दयनीय थी।***

मुख्य शब्द:- समाज, अधिकार, रिति-रिवाज, सतिप्रथा

---------------------------------x-------------------------------

भूमिका:-

मुगलकाल में स्त्रियों की स्थिति काफी दयनीय थी। उनको व्यक्तियों के समान अधिकार प्राप्त नही थे। कुछ उच्च वर्ग की महिलाओं की दशा ठीक थी। लेकिन वह महिलाएं संख्या में बहुत कम थी जबकि निम्न वर्ग की महिलाए संख्या में बहुत ज्यादा थी जिसके साथ अनेक अत्याचार किये जाते थे। मुगलकाल में भारतीय समाज में स्त्रियों की दशा को शोधकर्ता वर्गो में बाटता है।

1- उच्च वर्ग में स्त्रियों की स्थितिः-

मुगलकालीन भारतीय समाज की उच्च वर्ग से संबंधित स्त्रियों का समाज में सम्मान था। उनकी उचित शिक्षा की और विशेष ध्यान दिया जाता था। मुगल बादशाह अपनी बेगमों का पूर्ण ध्यान रखते थे। उन्हें कुछ विशेष अधिकार भी दिए गए थे। मुगलकाल की राजनीति में, बाबर की मां, बहन, जहाँगीर की पत्नी, शाहजहां की पत्नी, औरंगजैब की बहन आदि ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके पास बड़ी-2 जागीरें होती थी। उन्हें विशेष अनुदान भी प्राप्त होते थे। इन स्त्रियों ने शिक्षा, व्यापार, चित्रकला, संगीत कला, नृत्य कला को प्रोत्साहन देने में उल्लेखनीय योगदान दिया। इस वर्ग की स्त्रियां हृदय से उद्वार एवं दयाल होती थी। वे महलो की सजावट की और भी विशेष दिलचस्पी लेती थी। उनका जीवन स्तर बहुत अच्छा था। उनके रहन-सहन, वस्त्र, आभूषण उच्च कोटि के थे। इसलिए वे आराम का जीवन व्यतीत करती थी।

जन-साधारण वर्ग में स्त्रियों की स्थिति:

मुगलकालीन भारतीय समाज में जन साधारण वर्ग की स्त्रियों की स्थिति दयनीय थी। समाज ने जो अधिकार पुरूषों को दिए थे स्त्रियों को उनसे वंचित रखा गया था। समाज में स्त्रियों की स्थिति पुरूषों के जूतों के समान समझी जाती थी। उन्हें केवल भोग विलास की वस्तु समझा जाता था। बादशाह एवं अमीर वर्ग के लोगों ने बड़े-बड़े हरम बनाए हुए थे। इन हरमों में हजारों की संख्या में अत्यन्त सुन्दर स्त्रियां रखी जाती थीं। वे अपनी अदाओं, नृत्य एवं संगीत द्वारा पुरूषों का मनोरंजन करती थी। प्रसन्न होने पर बादशाह व अन्य अमीर उन्हें बहुमूल्य उपहार भेंट करते थे। वे अपनी यौवनावस्था तक हरम में रह सकती थी। उसके पश्चात् उन्हें वहां से निकाल दिया जाता था। शेष जीवन में वे दर-दर की ठोकरें खाने के लिए बाध्य हो जाती थी। उस समाज में प्रचलित निम्नलिखित कुप्रथाओं ने उनकी स्थिति को नरक समाज बना दिया था।

कन्या वधः-

हिन्दू समाज में उस समय लड़कियों के जन्म को अपशगुन माना जाता था। समाज में प्रचलित रीति-रिवाज के अनुसार लड़की के विवाह पर भारी खर्च करना पड़ता था। समाज का अधिकतम वर्ग निर्धन था और वह इतना भारी खर्च नहीं कर सकता था। लड़की का विवाह न होना धर्म और समाज के विरूद्ध समझा जाता था। इसके अतिरिक्त मुसलमान हिन्दुओं की जवान लड़कियों को बलपूर्वक उठाकर ले जाते थे। इसलिए

www.ignited.in

बहुत से हिन्दु लड़की के जन्म लेते ही उसे मार देते थे। बाल विवाह:-

उस समय समाज में प्रचलित रीति-रिवाजों के अनुसार लड़कियों का विवाह बहुत ही छोटी आयु भाव 6 से 8 वर्ष के भीतर कर दिया जाता था। परिणामस्वरूप उनकी शिक्षा की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता था। छोटी आयु में विवाह होने के कारण्न उन पर गृहस्थी की सभी जिम्मेदारियां आन पड़ती थी। जल्दी सन्तान पैदा होने के कारण उनके स्वास्थ्य पर बुराप्रभाव पड़ता था।

सती-प्रथा:-

मुगलकालीन समाज की सबसे बडी बुराई सती प्रथा की थी। इस प्रथा के अनुसार यदि किसी स्त्री के पति की मृत्यु हो जाती थी तो उसे बलपूर्वक पति की चिता के साथ जीवित जला दिया जाता था। पति की मृत्यु के समय यदि कोई स्त्री गर्भवती होती थी तो उसे बच्चे को जन्म देने के बाद पति की किसी वस्तु के साथ सती कर दिया जाता था। समाज में विधवा जीवन नारक होने के कारण बहुत-सी स्त्रियां स्वयं ही सती हो जाना पसन्द करती थी।

विधवा पुनः विवाह पर रोक:

उस समय समाज में विधवा का जीवन नरक के समान था। समाज द्वारा विधवा पुनर्विवाह की आज्ञा नहीं थी। विधवा के बाल काट दिए जाते थे। उसके हार श्रृंगार पर पाबन्दी लगाई जाती थी। उसे घरेलू खुशी तथा त्यौहारों के अवसरों पर सम्मिलित होने की आज्ञा नहीं थी। विधवा का सभी निरादर करते थे। समाज में उनका जीवन अछुत के समान था।

बहु विवाह:

मुसलमानों तथा उच्च वर्ग के हिन्दुओं में बहु-विवाह की प्रथा प्रचलित थी। प्रत्येक मुसलमान चार विवाह करवा सकता था। उन में तलाक प्रथा बहुत प्रचलित थी। वे पहली पत्नियों को तलाक देते जाते थे तथा एक विवाह और करवाते रहते थे। अधिक पत्नियों के कारण उनमें आपसी झगड़े चलते रहते थे। इनके अतिरिक्त वे बड़ी संख्या में रखोलें भी राखते थे। संक्षेप में इस प्रथा ने स्त्रियों की दश को और दयनीय बना दिया था।

पर्दा प्रथा:

मुगल काल में पर्दा प्रथा का प्रचलन बहुत बढ़ गया था। मुस्लिम स्त्रियों में पर्दा प्रथा पर बहुत बल दिया जाता था। घर की चारदीवारी में भी वे पर्दे में रहती थीं। वे घर में आने वाले मेहमानों एवं रिश्तेदारों के समक्ष बिना पर्दे के नहीं आ सकती थी। घर से बाहर जाते समय भी उन्हें सदैव पर्दे में रहना पड़ता था। यदि कोई स्त्री बिना पर्दा बाजार में जाती तो उसे बलपूर्वक वेश्याओं के सुपुर्द कर दिया जाता था। हिन्दू स्त्रियों ने भी इस प्रथा को मुसलमानों से अपना लिया था। इसके पीछे उनका उद्देश्य मुसलमानों से अपने इज्जत की रक्षा करना था। निम्न वर्ग की स्त्रियों में यह प्रथा प्रचलित नहीं थी क्योंकि उन्हें अपने जीवन के निर्वाह के लिए खेतों, कारखानों व लोगों के घरों में कार्य के लिए जाना पड़ता था।

निष्कर्ष:-

मुगलकालीन समाज में स्त्रियों की दशा तथा जीवन बहुत दयनीय था। समाज में पुरूषों के समान अधिकार प्राप्त नही थे। उनको सभी स्वतंत्रता तथा खुशीयों और तो और त्योहार से भी दुर रखा जाता था। राजा-महाराजाओं की परिवार तथा रिश्तेदारी के घरों में महिलाएं की वो स्थिति नहीं थी जो साधारण परिवारों के घरों की स्त्रियों की थी।

संदर्भ-सूचीः

1. मना गोड़, भारत का इतिहास, 1995, पृ. 165
2. सुमित सरकार, भारत का इतिहास, 1999 पृ0 111
3. Dr. A.B. Pandey Later Medieval India, P. 487
4. Dr. G.C. Narang, Transportation of Sikhism, 1989, p. 30.
5. Dr. K.L. Srivastava, Medieval Indian Culture, 1975, p. 44

Corresponding Author

Sushila Devi*

M.A. in History, UGC NET

sushilabhakhar23@gmail.com